International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website: https://ijaar.co.in/*
Volume-13, Issue-3 | January – February 2026

Original Article

धूमिल की कविता: आम आदमी हलफनामा

डॉ. सोमनाथ वांजरवाडे

सहयोगी प्राध्यापक (हिंदी),

विवेकानंद महाविद्यालय, छत्रपति संभाजीनगर

Manuscript ID:
IJAAR-130372
ISSN: 2347-7075
Impact Factor – 8.141

Volume - 13
Issue - 3
January – February 2026
Pp. 394 - 401

Submitted: 11 Jan.2026
Revised: 27 Jan. 2026
Accepted: 30 Jan. 2026
Published: 10 Feb. 2026

Corresponding Author:
डॉ. सोमनाथ वांजरवाडे

Quick Response Code:

Website: https://ijaar.co.in/

DOI: 10.5281/zenodo.22548472

DOI Link:
https://doi.org/10.5281/zenodo.22548472

Creative Commons

OPEN ACCESS

हिंदी कविता के आधुनिक विकासक्रम में सुदामा पांडेय 'धूमिल' का नाम एक ऐसे कवि के रूप में लिया जाता है, जिसने कविता को जनजीवन की कठोर वास्तविकताओं, राजनीतिक विडंबनाओं, सामाजिक विषमताओं और व्यवस्था-विरोधी चेतना से जोड़ा। धूमिल का काव्य संसार उनका स्वयं का भोगा हुआ और खुली आंखों से देखा हुआ यथार्थ है। धूमिल के तीन ही कवितासंग्रह है जिसमें लगभग सव्वासौ के आसपास कविताएँ हैं - संसद से सड़क तक जो 1972 में प्रकाशित कवितासंग्रह है। जो हमें तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक परिदृश्य का गहराई से परिचय कराती हैं। इस संग्रह में भय, भूख, अकाल, सत्तालोलुपता, अकर्मण्यता और भटकाव पर आक्रमकता से प्रहार किया गया है। उसके बाद द्वितीय कवितासंग्रह है कल सुनना मुझे जो 1976 में प्रकाशित हुआ। इसी परंपरा में तृतीय और अंतिम कवितासंग्रह है सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र जो 1983 में प्रकाशित हुआ। यह केवल काव्य संग्रह नहीं है तो तत्कालीन समाज का एक जिवंत दस्तावेज़ है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), *which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.*

How to cite this article:
डॉ. सोमनाथ वांजरवाडे. (2026). धूमिल की कविता: आम आदमी हलफनामा. International Journal of Advance and Applied Research, 13(3), 394 - 401. https://doi.org/10.5281/zenodo.22548472

हम सब जानते है कि बड़ी लंबी गुलामी के बाद लाखों लोगों बलिदान के बाद हम १९४७ में आजाद हुए थे। जिसमें कम अधिक मात्रा में सभी भारतीयों का योगदान था। इस सुखद स्वप्न का इंतजार कर रहें भारतीय लोगों के हिस्से में शिवाय निराशा के कुछ नहीं आया। इसलिए धूमिल की कविता में वह आक्रोश दिखाई देता है जो आजादी के बाद के भारतीय समाज में व्याप्त मोहभंग, शोषण, बेरोजगारी, गरीबी, भ्रष्टाचार, राजनीतिक पाखंड और सामाजिक असमानता से

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-3 | January – February 2026

उत्पन्न हुआ था। धूमिल की कविता में सामाजिक विद्रोह को समझने के लिए स्वतंत्रता के बाद के भारतीय समाज की पृष्ठभूमि को समझना आवश्यक है। स्वतंत्रता के समय भारतीय जनता ने एक ऐसे राष्ट्र का सपना देखा था जिसमें गरीबी समाप्त होगी, शोषण खत्म होगा और सभी नागरिकों को समान अवसर मिलेंगे। लोकतंत्र के माध्यम से सामाजिक न्याय स्थापित होगा। लेकिन धीरे-धीरे यह महसूस हुआ कि राजनीतिक स्वतंत्रता अपने आप सामाजिक और आर्थिक स्वतंत्रता में परिवर्तित नहीं हुई। सत्ता के केंद्रों में बैठे लोगों और आम जनता के बीच दूरी बनी रही। बेरोजगारी, महंगाई, भ्रष्टाचार और आर्थिक असमानता बढ़ती रही। राजनीतिक भाषणों में जनता का नाम लिया जाता था, लेकिन वास्तविक नीतियों का लाभ अक्सर सीमित वर्गों तक पहुंचता था।

धूमिल इसी मोहभंग के कवि हैं। उनकी कविता में स्वतंत्रता के आदर्शों का अपमान दिखाई देता है। वे लोकतंत्र के खोखले नारों पर प्रश्न करते हैं। उनके लिए लोकतंत्र केवल चुनाव, संसद और भाषणों का नाम नहीं है। लोकतंत्र तभी सार्थक है जब आम आदमी के जीवन में सम्मान, सुरक्षा और आर्थिक न्याय हो। उनकी कविता में इसलिए तीखा प्रश्न उठता है कि आखिर स्वतंत्रता का लाभ किसे मिला? यदि व्यवस्था में गरीब और शोषित व्यक्ति पहले की तरह ही पीड़ित है, तो स्वतंत्रता का अर्थ क्या रह जाता है? यही प्रश्न धूमिल की सामाजिक विद्रोही चेतना का आधार बनता है।

उन्होंने कविता को केवल सौंदर्य और भावुकता का माध्यम न मानकर उसे सामाजिक यथार्थ से मुठभेड़ करने वाला औजार बनाया। उनकी कविता में व्यवस्था के प्रति असंतोष केवल व्यक्तिगत शिकायत नहीं है, बल्कि वह व्यापक सामाजिक विद्रोह का रूप ग्रहण कर लेता है। वे स्वतंत्र भारत कि व्यवस्था से 'बीस साल बाद कविता' में पूछते हैं-

"क्या, आजादी तीन थके हुए रंगों का नाम है?
जिन्हें एक पहिया ढोता है
या इसका कोई खास मतलब होता है।"१

वहीं धूमिल ने तमाम भारतीय ठगे हुए, निराश लोगों को इस प्रकार से जुबान को स्वर दिया -

"जनतंत्र, त्याग, स्वतंत्रता
संस्कृति, शांति, मनुष्यता
यह सारे शब्द थे
सुनहरे वादे थे
खुशहाल इरादे थे।" २

धूमिल उस पीढ़ी के कवि हैं जिसने स्वतंत्र भारत के आदर्शवादी स्वप्न और उसके वास्तविक जीवन के बीच गहरी खाई को देखा। स्वतंत्रता के बाद जनता को जिस सामाजिक न्याय, समानता, लोकतंत्र और आर्थिक समृद्धि की आशा थी, वह पूरी तरह साकार नहीं हुई। सत्ता बदली, लेकिन आम आदमी की स्थिति में अपेक्षित परिवर्तन नहीं आया। किसान, मजदूर, बेरोजगार युवा और निम्नवर्गीय जनता जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं के लिए संघर्ष करती रही। दूसरी ओर राजनीतिक वर्ग सत्ता, सुविधा और भ्रष्टाचार में उलझता गया। इस विडंबना ने धूमिल की संवेदना को गहरे स्तर पर प्रभावित किया। धूमिल की कविता का विद्रोह किसी एक राजनीतिक दल, व्यक्ति या संस्था के विरुद्ध नहीं है। यह उस पूरी व्यवस्था के विरुद्ध है जिसमें लोकतंत्र के नाम पर जनता का शोषण होता है, राजनीति जनसेवा के स्थान पर सत्ता का साधन बन जाती है और संविधान में लिखी समानता सामाजिक जीवन में दिखाई नहीं देती। धूमिल

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-3 | January – February 2026

की कविता इसी विरोधाभास को उजागर करती है। उनकी भाषा में गुस्सा है, व्यंग्य है, कटुता है और कभी-कभी आक्रामकता भी है; लेकिन इसके पीछे एक संवेदनशील और न्यायपूर्ण समाज की आकांक्षा छिपी हुई है। इसलिए धूमिल एक मूल सवाल उपस्थित करते हुए व्यवस्था से सवाल पूछते है -

"एक आदमी
रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी है
जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है
वह सिर्फ़ रोटी से खेलता है
मैं पूछता हूँ--
'यह तीसरा आदमी कौन है?'
मेरे देश की संसद मौन है।"३

सवाल आज भी वहीं खड़ा है व्यवस्था के सामने – अनुत्तरित, भले ही आजादी को ८० साल क्यों न हुए हो।

धूमिल की काव्य-दृष्टि मूलतः यथार्थवादी और जनवादी है। वे जीवन को उसकी वास्तविक परिस्थितियों में देखते हैं। उनके लिए कविता कल्पना के किसी दूरस्थ संसार की रचना नहीं, बल्कि वर्तमान जीवन की समस्याओं से सीधे संवाद करने का माध्यम है। वे समाज के उन वर्गों की आवाज बनते हैं जिन्हें सत्ता और अभिजात संस्कृति अक्सर अनदेखा कर देती है। धूमिल के यहां सामाजिक यथार्थ केवल गरीबी का चित्रण नहीं है। वे गरीबी के पीछे काम करने वाली आर्थिक और राजनीतिक संरचनाओं को पहचानते हैं। वे यह प्रश्न उठाते हैं कि जब लोकतंत्र जनता के लिए है, तो जनता ही क्यों भूखी, बेरोजगार और असुरक्षित है? जब संविधान समानता का वादा करता है, तो सामाजिक जीवन में इतनी असमानता क्यों है? जब राजनीति जनसेवा का माध्यम है, तो राजनीतिक नेता जनता से दूर क्यों हो जाते हैं? उनकी प्रसिद्ध कविता 'मोचीराम' में एक साधारण मोची के माध्यम से भारतीय समाज की वर्गीय संरचना और लोकतांत्रिक व्यवस्था की विडंबना सामने आती है। मोचीराम का जीवन बताता है कि व्यक्ति की सामाजिक पहचान और आर्थिक स्थिति उसके सम्मान और अधिकारों को निर्धारित करती है। धूमिल यहां केवल एक मोची की कहानी नहीं कहते, बल्कि पूरे भारतीय समाज की वर्ग-व्यवस्था पर प्रश्न उठाते हैं। मोचीराम के माध्यम से कवि यह स्थापित करता है कि समाज में मनुष्य का मूल्य उसके मनुष्य होने से नहीं, बल्कि उसकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति से तय किया जाता है। यह स्थिति स्वयं में विद्रोह को जन्म देती है। कविता का सामाजिक विद्रोह इसी अनुभव से पैदा होता है कि लोकतांत्रिक व्यवस्था ने मनुष्य को बराबरी का अधिकार तो दिया है, लेकिन व्यवहार में बराबरी अभी भी दूर है।

धूमिल की कविताओं में राजनीतिक व्यवस्था की आलोचना सबसे प्रमुख रूप में दिखाई देती है। वे राजनीति को उसके आदर्शवादी रूप में नहीं, बल्कि उसके व्यावहारिक और भ्रष्ट रूप में देखते हैं। उनकी दृष्टि में राजनीति और आम जनता के बीच गहरा अंतर पैदा हो चुका है। धूमिल लोकतंत्र की हकीकत बयान करते हुए कहते हैं-

"ना कोई प्रजा है,
ना कोई तंत्र है,
यह आदमी के खिलाफ
आदमी का खुला षड्यंत्र है।"४

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-3 | January – February 2026

उनकी कविता 'पटकथा' में स्वतंत्रता के बाद के भारतीय राजनीतिक और सामाजिक जीवन की विसंगतियां तीखे ढंग से सामने आती हैं। इसी तरह 'संसद से सड़क तक' शीर्षक ही उनकी काव्य-दृष्टि को स्पष्ट करता है। संसद सत्ता का केंद्र है, जबकि सड़क आम आदमी के जीवन का प्रतीक है। धूमिल इन दोनों के बीच मौजूद दूरी को उजागर करते हैं। उनके लिए संसद में होने वाली बहसों और सड़क पर जीने वाले मनुष्य की वास्तविक समस्याओं के बीच गहरा विरोधाभास है। संसद में लोकतंत्र, विकास और जनकल्याण की बातें होती हैं, लेकिन सड़क पर आदमी बेरोजगारी, भूख और असमानता से जूझता है। यह विरोधाभास कवि के भीतर विद्रोह पैदा करता है। आज की राजनीतिक व्यवस्था की असली तस्वीर पेश करते हुए धूमिल कहते हैं-

"हाँ, यह सही है कि कुर्सियां वही हैं
सिर्फ टोपियां बदल गई हैं
और
सच्चे मतभेद के अभाव में
लोग उछल-उछल कर
अपनी जगहें बदल रहे हैं।"५

धूमिल राजनीति के उस चरित्र पर प्रहार करते हैं जिसमें चुनाव के समय जनता महत्वपूर्ण हो जाती है, लेकिन सत्ता प्राप्त होते ही जनता की समस्याएं गौण हो जाती हैं। नेता जनता के नाम पर सत्ता प्राप्त करते हैं और फिर सत्ता का उपयोग अपने हितों के लिए करने लगते हैं। कवि इस राजनीतिक पाखंड को स्वीकार नहीं करता। उनका विद्रोह इसलिए राजनीतिक भी है और नैतिक भी। वे राजनीति से केवल शासन-व्यवस्था बदलने की मांग नहीं करते, बल्कि राजनीति के चरित्र में ईमानदारी और जवाबदेही चाहते हैं। लोकतंत्र की विडंबना या आज की राजनीतिक व्यवस्था की असली तस्वीर पेश करते हुए धूमिल पटकथा में कहते हैं-

"हाँ, यह सही है कि कुर्सियां वही हैं
सिर्फ टोपियां बदल गई हैं। ६

धूमिल के यहां लोकतंत्र एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। वे लोकतंत्र के विरोधी नहीं हैं; बल्कि वे लोकतंत्र को वास्तविक अर्थों में लागू होते देखना चाहते हैं। उनका विरोध उस नकली लोकतंत्र से है जिसमें जनता केवल मतदान करने वाली संख्या बनकर रह जाती है। लोकतंत्र का वास्तविक अर्थ है— समानता, स्वतंत्रता, न्याय और नागरिक सम्मान। यदि गरीब व्यक्ति को शिक्षा, रोजगार और स्वास्थ्य का अवसर नहीं मिलता, तो लोकतंत्र का आदर्श अधूरा रह जाता है। धूमिल इसी अधूरे लोकतंत्र कि हकीकत बयां करते हुए कहते हैं-

"अपने यहाँ संसद...
तेली की वह घानी है
जिसमें आधा तेल
और आधा पानी है।"७

धूमिल अपनी कविताओं के माध्यम से जातिगत और सामाजिक असमानता का महत्वपूर्ण प्रश्न उपस्थित करता है। भारतीय समाज में सदियों से चली आ रही जातिगत संरचना ने मनुष्य की गरिमा को असमान रूप से विभाजित किया है। कुछ जातियों को विशेषाधिकार मिले, जबकि कुछ को सामाजिक अपमान और वंचना का सामना करना पड़ा। इसलिए धूमिल असमानता को नकारते हुए सामाजिक अवधारणाओं पर प्रश्न उपस्थित करते हैं। उनके लिए मनुष्य की गरिमा उसकी जाति या पेशे से नहीं, बल्कि उसके मनुष्य होने से निर्धारित होनी चाहिए। 'मोचीराम' जैसे पात्रों के माध्यम से कवि उस समाज का विरोध करता है जिसमें श्रम

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-3 | January – February 2026

करने वाला व्यक्ति सम्मान से वंचित रहता है। यह श्रम के प्रति भारतीय समाज की विडंबनापूर्ण दृष्टि पर भी प्रहार है। जो व्यक्ति समाज की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए श्रम करता है, वही सामाजिक सम्मान की सीढ़ी पर नीचे खड़ा कर दिया जाता है। धूमिल का विद्रोह इसलिए सामाजिक प्रतिष्ठा की उस पूरी व्यवस्था के खिलाफ है जो श्रम को छोटा और विशेषाधिकार को बड़ा मानती है।

धूमिल की कविता में मजदूर, श्रमिक और निम्नवर्गीय मनुष्य विशेष महत्व रखते हैं। वे जानते हैं कि भारतीय समाज की आर्थिक संरचना में श्रम करने वाला वर्ग सबसे अधिक आवश्यक होते हुए भी सबसे अधिक वंचित है।मजदूर उत्पादन करता है, लेकिन उत्पादन के लाभ का बड़ा हिस्सा उसे नहीं मिलता। किसान अन्न पैदा करता है, लेकिन स्वयं गरीबी में जीवन बिताता है। श्रमिक शहरों को बनाता है, लेकिन स्वयं असुरक्षित और अस्थायी जीवन जीता है। धूमिल इसी आर्थिक विरोधाभास को पहचानते हैं। उनकी कविता में मजदूर के प्रति सहानुभूति मात्र नहीं है। वे उसकी स्थिति के पीछे मौजूद शोषणकारी व्यवस्था पर प्रश्न उठाते हैं। यही उनकी कविता को सामाजिक विद्रोह का रूप देता है। इसलिए धूमिल शोषण की महीन संरचनाओं को बेपर्दा करते हुए कहते हैं-

"लोहे का स्वाद, लोहार से मत पूछो
उस घोड़े से पूछो, जिसके मुंह में लगाम है।"८

धूमिल ऐसी सामाजिक व्यवस्था का विरोध करते हैं जिसमें अमीर और अमीर होता जाता है तथा गरीब और गरीब होता जाता है। तभी वह लिखते हैं-

"जिसके पास थाली है
हर भूखा आदमी
उसके लिए, सबसे भद्दी
गाली है
हर तरफ कुआं है
हर तरफ खाई है
यहां, सिर्फ वह आदमी देश के करीब है
जो या तो मूर्ख है
या फिर गरीब है।"९

धूमिल का विद्रोह भावुक करुणा से आगे जाकर प्रश्न करता है - यदि समाज का निर्माण श्रम से होता है, तो श्रमिक को ही सम्मान और सुरक्षा से क्यों वंचित रखा जाए? यदि आर्थिक विकास का उद्देश्य जनता का कल्याण है, तो विकास के बावजूद गरीब आदमी की स्थिति क्यों नहीं बदलती? इस प्रकार उनकी कविता आर्थिक न्याय की मांग करती है।

धूमिल की कविताओं में बेरोजगार युवा की निराशा और आक्रोश भी दिखाई देता है। स्वतंत्रता के बाद शिक्षा का विस्तार हुआ, लेकिन शिक्षा के अनुरूप रोजगार के अवसर पर्याप्त नहीं थे। पढ़ा-लिखा युवा व्यवस्था से सवाल करने लगा। यह युवा वर्ग न तो पुराने मूल्यों को पूरी तरह स्वीकार कर सकता था और न ही नए समाज की संभावनाओं को वास्तविक रूप में देख पा रहा था। उसके सामने भविष्य अनिश्चित था। धूमिल ने इसी बेचैनी को स्वर दिया। उनकी कविता में आक्रोश इसलिए है क्योंकि कवि स्वयं उस सामाजिक परिस्थिति से संवाद करता है जिसमें आशाएं लगातार टूट रही हैं। उनका गुस्सा व्यक्तिगत असफलता का गुस्सा नहीं, बल्कि उस व्यवस्था के प्रति है जिसने युवा पीढ़ी को सपने तो दिए, लेकिन उन्हें पूरा करने के साधन नहीं दिए। धूमिल की सामाजिक विद्रोही चेतना केवल विषय-वस्तु में ही नहीं, बल्कि उनकी भाषा में भी दिखाई देती है। उन्होंने हिंदी

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-3 | January – February 2026

कविता की पारंपरिक काव्य-भाषा से अलग एक ऐसी भाषा का प्रयोग किया जो सड़क, बाजार, कारखाने और सामान्य जीवन से निकली हुई लगती है।

यह विद्रोह केवल धूमिल कि कविता तक ही नहीं बल्कि भाषा में भी माध्यम बन जाता है। धूमिल की भाषा इसलिए स्वयं एक विद्रोह है। वे साहित्यिक अभिजात्यवाद के विरुद्ध खड़े होते हैं। वे कविता की भाषा को सामान्य मनुष्य की भाषा बनाते हैं। उनकी भाषा में बोलचाल के शब्द हैं, मुहावरे हैं, व्यंग्य है और कई बार कठोर शब्दावली भी है। उन्होंने भाषा को कृत्रिम सौंदर्य से मुक्त किया। उनका उद्देश्य कविता को सजाना नहीं, बल्कि सामाजिक वास्तविकता को उसकी पूरी तीव्रता के साथ प्रस्तुत करना था। उनकी कविता की भाषा में गाली या कठोर शब्द का प्रयोग भी एक सामाजिक अर्थ रखता है। यह केवल चौंकाने के लिए नहीं है। वह उस जीवन की कठोरता को व्यक्त करता है जिसे सभ्य और साहित्यिक भाषा अक्सर छिपा देती है।

धूमिल की कविता में व्यक्त व्यंग्य अत्यंत प्रभावशाली है। वे व्यवस्था की विसंगतियों को केवल सीधे-सीधे बयान नहीं करते, बल्कि उन्हें इस तरह प्रस्तुत करते हैं कि उनका विरोधाभास स्वयं उजागर हो जाए। उनका व्यंग्य राजनीतिक नेताओं, नौकरशाही, संसद, लोकतंत्र के खोखले नारों और सामाजिक पाखंड पर केंद्रित है। उनके व्यंग्य में हास्य कम और आक्रोश अधिक है। पाठक मुस्कुराने के बजाय असहज होता है और उसे व्यवस्था के वास्तविक चरित्र पर सोचने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

यही धूमिल के व्यंग्य की विशेषता है। वे व्यंग्य को मनोरंजन का माध्यम नहीं बनाते, बल्कि सामाजिक चेतना का हथियार बनाते हैं। धूमिल निस्तेज हो गई जनता में चेतना का संचार करते हुए नवजागरण का नूतन संदेश देते हुए कहते हैं-

"अपनी आदतों में
फूलों की जगह पत्थर भरो
मासूमियत के हर तकाजे को ठोकर मार दो
अब वक्त आ गया है कि तुम उठो
और अपनी ऊब को आकार दो।"१०

धूमिल का विद्रोह केवल राजनीतिक या आर्थिक नहीं, बल्कि नैतिक भी है। वे समाज में फैली बेईमानी, अवसरवादिता और संवेदनहीनता से आहत हैं। उनके लिए असली समस्या यह है कि अन्याय धीरे-धीरे सामान्य माना जाने लगा है। लोग भ्रष्टाचार को व्यवस्था का स्वाभाविक हिस्सा समझने लगते हैं। गरीब की पीड़ा सामान्य लगने लगती है। राजनीतिक झूठ को राजनीति की अनिवार्यता मान लिया जाता है। धूमिल इस सामान्यीकरण के खिलाफ खड़े होते हैं। उनकी कविता पाठक को असुविधाजनक प्रश्नों के सामने खड़ा करती है। वह पूछती है कि क्या हम अन्याय के साथ समझौता कर चुके हैं? क्या हमारी चुप्पी शोषण को मजबूत नहीं करती? क्या केवल व्यवस्था को दोष देना पर्याप्त है, या व्यक्ति की नैतिक जिम्मेदारी भी है? इस प्रकार धूमिल की कविता पाठक के भीतर भी विद्रोह की चेतना उत्पन्न करती है।

धूमिल की कविता का सबसे बड़ा गुण उसकी आम आदमी के प्रति प्रतिबद्धता है। उनके यहां नायक कोई असाधारण व्यक्ति नहीं, बल्कि वह साधारण आदमी है जो रोज अपने जीवन से संघर्ष करता है। मोची, मजदूर, बेरोजगार युवा, निम्नवर्गीय व्यक्ति और सड़क पर रहने वाला

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-3 | January – February 2026

नागरिक—ये सभी धूमिल की कविता के केंद्र में आते हैं। वे उन लोगों को आवाज देते हैं जिनकी आवाज सत्ता और अभिजात साहित्य में अक्सर दब जाती है। धूमिल की दृष्टि में आम आदमी केवल दया का पात्र नहीं है। वह प्रश्न करने वाला मनुष्य है। उसमें व्यवस्था को बदलने की क्षमता है। इसलिए धूमिल की कविता में जनपक्षधरता के साथ संघर्ष की चेतना भी मौजूद है।

धूमिल की कविता को केवल नकारात्मक या आक्रोशपूर्ण कविता मानना उचित नहीं होगा। उनके विद्रोह के पीछे एक सकारात्मक सामाजिक आकांक्षा है। वे अन्याय को इसलिए नकारते हैं क्योंकि वे न्याय चाहते हैं। वे राजनीतिक पाखंड का विरोध इसलिए करते हैं क्योंकि वे वास्तविक लोकतंत्र चाहते हैं। वे सामाजिक असमानता पर प्रश्न इसलिए उठाते हैं क्योंकि वे मनुष्य की बराबरी चाहते हैं। वे शोषण के खिलाफ इसलिए खड़े होते हैं क्योंकि वे सम्मानपूर्ण जीवन की मांग करते हैं। इस दृष्टि से धूमिल का विद्रोह विनाशकारी नहीं, बल्कि परिवर्तनकारी है। वे केवल यह नहीं कहते कि वर्तमान व्यवस्था खराब है; उनकी कविता अप्रत्यक्ष रूप से एक ऐसी व्यवस्था की मांग करती है जिसमें मनुष्य की गरिमा सर्वोच्च हो।

धूमिल की कविता आज भी इसलिए प्रासंगिक लगती है क्योंकि जिन समस्याओं पर उन्होंने प्रश्न उठाए थे, उनके अनेक रूप आज भी समाज में मौजूद हैं। आर्थिक असमानता, बेरोजगारी, राजनीतिक अविश्वास, सामाजिक विभाजन, भ्रष्टाचार और आम आदमी की समस्याएं आज भी सार्वजनिक विमर्श का हिस्सा हैं। बेशक समय बदल गया है और सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियां भी बदली हैं, लेकिन सत्ता और जनता के बीच संबंध, आर्थिक असमानता और सामाजिक न्याय के प्रश्न आज भी महत्वपूर्ण हैं। धूमिल हमें यह याद दिलाते हैं कि लोकतंत्र केवल संस्थाओं का नाम नहीं है। उसकी सफलता नागरिक के जीवन में दिखाई देनी चाहिए। यदि सामान्य मनुष्य सम्मान, अवसर और न्याय से वंचित है, तो लोकतंत्र के आदर्शों पर प्रश्न उठाना आवश्यक है।

अतः कहा जा सकता है कि धूमिल की कविता का विद्रोह नकारात्मकता का विद्रोह नहीं, बल्कि न्याय, समानता, लोकतांत्रिक गरिमा और मनुष्य की प्रतिष्ठा के लिए किया गया विद्रोह है। उनका कवि-स्वर हमें यह विश्वास दिलाता है कि कविता केवल सुंदर शब्दों का संसार नहीं, बल्कि समय से टकराने और समाज को आईना दिखाने की शक्ति भी रखती है। धूमिल की कविता हिंदी साहित्य में सामाजिक विद्रोह की एक सशक्त आवाज है। उनका विद्रोह बहुआयामी है राजनीतिक भी, आर्थिक भी, सामाजिक भी और नैतिक भी। उन्होंने स्वतंत्रता के बाद के भारतीय समाज के उस चेहरे को सामने रखा जिसमें लोकतंत्र के आदर्श और जनता का वास्तविक जीवन एक-दूसरे से दूर होते जा रहे थे। उनकी कविता में सत्ता के प्रति अविश्वास है, लेकिन लोकतंत्र के प्रति गहरी अपेक्षा भी है। उसमें व्यवस्था के प्रति आक्रोश है, लेकिन बेहतर समाज की आकांक्षा भी है। उसमें सामाजिक असमानता का विरोध है, लेकिन मनुष्य की समानता में विश्वास भी है। धूमिल की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि उन्होंने कविता को केवल अनुभूति का दस्तावेज नहीं रहने दिया, बल्कि उसे सामाजिक हस्तक्षेप का माध्यम बनाया। उनकी कविता पाठक को सोचने, सवाल करने और व्यवस्था के भीतर छिपे विरोधाभासों को पहचानने के लिए बाध्य करती है।

संदर्भ:

1. संसद से सड़क तक - पृ.१०
2. वहीं - पृ.१२६
3. कल सुनना मुझे- पृ.६६
4. सुदामा पांडे का प्रजातंत्र – पृ. १६
5. संसद से सड़क तक - पृ.१२७
6. वहीं - पृ.१२५
7. वहीं - पृ.१२७
8. कल सुनना मुझे- पृ.१०९
9. हिंदवी - https://www.hindwi.org/kavita/pataktha-dhumil-kavita
10. संसद से सड़क तक – धूमिल, पृ. ११४